प्रकाशन नं.
92

पंथ प्रमाणित

सिख रहित मर्यादा

(आचार-संहिता)



शिरोमनी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर जी द्वारा प्रकाशित
पंजाबी सस्करण का अनुदित संस्करण)

प्रकाशक :
सिख मिशनरी कालेज (रजिः)
लुधियाना

2
रूपये

੧ੴ वाहिगुरु जी की फतहि ॥

प्रकाशन नं: 92

पंथ प्रमाणित

सिख रहित मर्यादा



प्रकाशक

सिख मिशनरी कॉलेज (रजि:)

लुधियाना

१ ओंकार (੧ੳ) सतिगुर प्रसादि ॥

सिख रहित मर्यादा (आचार संहिता)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की **'रहु रीत सब-कमेटी'** द्वारा सिख रहन-सहन अथवा सिख आचार संहिता के प्रारूप की स्वीकृति **"सर्व हिंद सिख मिशन बोर्ड"** ने अपने प्रस्ताव संख्या १, दिनांक १-८-१९३६ के द्वारा और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने प्रस्ताव संख्या १४, दिनांक १२-१०-१९३६ के द्वारा दी और फिर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की **"धार्मिक सलाहकार कमेटी"** ने अपनी बैठक दिनांक ७-१-१९४५ में इस पर विचार करके, कुछ संशोधन एवं परिवर्द्धन करने की सिफ़ारिश की। धार्मिक सलाहकार कमेटी की इस बैठक में नीचे लिखे सज्जन उपस्थित थे :

(१) सिंघ साहिब जत्थेदार मोहन सिंघ जी,
जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब।

(२) भाई साहिब भाई अच्छर सिंघ जी,
हैड ग्रंथी, श्री दरबार साहिब, अमृतसर।

(३) प्रो॰ तेजा सिंघ जी एम॰ ए॰
खालसा कालेज, अमृतसर।

(४) प्रो॰ गंगा सिंघ जी, प्रिंसीपल,
शहीद सिख मिशनरी कालेज, अमृतसर।

(५) ज्ञानी लाल सिंघ जी, एम॰ ए॰,
प्रोफेसर, शहीद सिख मिशनरी कालेज, अमृतसर

(६) प्रो॰ शेर सिंघ जी, एम॰ एस॰ सी॰,
गर्वनमेंट कालेज, लुधियाना।

(७) बावा प्रेम सिंघ जी होती (प्रसिद्ध हिस्टोरियन)।

(८) ज्ञानी बादल सिंघ जी, इंचार्ज, सिख मिशन, हापुड़ ।

धार्मिक सलाहकार कमेटी की सिफारिश के अनुसार इस संवर्द्धन-परिवर्द्धन की स्वीकृति शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपनी बैठक दिनांक ३-२-१९४५ के प्रस्ताव संख्या ९७ द्वारा दी ।

१ ओंकार (੧ੴ) सतिगुर प्रसादि ॥

आगे जो रहित मर्यादा (आचार संहिता) दी गयी है, वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की **"रहु-रीत कमेटी"** द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यालय में जिस रिपोर्ट सहित पहुंची थी, वह नीचे दी जाती है ।

रिपोर्ट 'रहु रीती-सब-कमेटी'

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

सेवा में,

श्रीमान् सैक्रेटरी साहिब,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर ।

श्रीमान् जी

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारों में गुरमर्यादा को ठीक तरह निश्चित करने हेतु, रहित मर्यादा का एक मसौंदा तैयार करने के लिए अधोलिखित सज्जनों की एक कमेटी बनायी थी ।

(१) ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, अमृतसर ।

(२) ज्ञानी शेर सिंघ जी ।

(३) भाई बुद्ध सिंघ जी ।

(४) अकाली कौर सिंघ जी ।

(५) संत संगत सिंघ ज़ी, कमालिया ।

(६) भाई कान्ह सिंघ जी, नाभा।

(७) संत गुलाब सिंघ जी, घोलिया।

(८) भाई लाभ सिंघ जी, ग्रंथी श्री हरिमंदिर साहिब।

(९) भाई हजूरा सिंघ जी, हज़ूर साहिब (या उनके द्वारा भेजा हुआ कोई प्रतिनिधि)।

(१०) पंडित बसंत सिंघ जी, पटियाला।

(११) भाई वीर सिंघ जी, अमृतसर।

(१२) ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द'।

(१३) बावा हरकिशन सिंघ जी, प्रिंसीपल, गुरु नानक खालसा कालेज, गुजरांवाला।

(१४) भाई त्रिलोचन सिंघ जी (सुर सिंघ, ज़िला लाहौर)।

(१५) ज्ञानी हमीर सिंघ जी, अमृतसर।

(१६) पंडित करतार सिंघ जी दाखा, ज़िला लुधियाना।

(१७) जत्थेदार साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब।

(१८) जत्थेदार साहिब, तख्त श्री केसगढ़ साहिब।

(१९) जत्थेदार साहिब, तख्त श्री पटना साहिब।

(२०) प्रोफैसर गंगा सिंघ जी।

(२१) प्रोफैसर जोध सिंघ जी।

(२२) संत मान सिंघ जी, कनखल।

(२३) जत्थेदार तेजा सिंघ जी।

(२४) भाई रणधीर सिंघ जी।

(२५) प्रोफेसर तेजा सिंघ जी (कनविनर)

इस सब कमेटी की बैठक दिनाँक ४-५ अक्तूबर १९३१, ३ जनवरी १९३२ व ३१ जनवरी, १९३२ को अकाल तख्त साहिब पर हुई, जिनमें नीचे लिखे सदस्य दर्शन दे कर विचार विमर्श में हिस्सा लेते रहे :

अकाली कौर सिंघ जी, ज्ञानी शेर सिंघ जी, संत मान सिंघ जी निर्मले, प्रो॰ गंगा सिंघ जी, जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब, जत्थेदार श्री तख्त केसगढ़ साहिब, ज्ञानी हीरा सिंघ जी "दर्द", भाई लाभ सिंघ जी ग्रंथी, ज्ञानी ठाकुर सिंघ जी, ज्ञानी

हमीर सिंघ जी, बावा हरकिशन सिंघ जी, एम॰ ए॰, जत्थेदार तेजा सिंघ जी, भाई त्रिलोचन सिंघ जी और दास, कनविनर।

इनके अतिरिक्त अधोलिखित सज्जन कभी-कभी दर्शन देते रहे : सरदार धर्म-अनंत सिंघ जी, प्रिंसीपल सिख मिशनरी कालेज, सरदार भाग सिंघ जी वकील गुरदासपुर, सरदार वसावा सिंघ जी, सैक्रेटरी शिरोमणि कमेटी, मास्टर तारा सिंघ जी (प्रधान, शिरोमणि अकाली दल) आदि।

यह प्रारूप इस रहु-रीत कमेटी द्वारा शिरोमणि कमेटी को पेश किया जाता है। आशा है आप इस मसौदे को पंथ की राय लेने के लिए प्रकाशित करेंगे और राय आने पर शिरोमणि कमेटी के इजलास में अंतिम स्वीकृति के लिए पेश करेंगे।

इसके उपरांत शिरोमणि कमेटी की आज्ञानुसार ८ मई, १९३२ को प्रारूप पर एक बार फिर विचार की गई। इस बैठक में निम्नलिखित सज्जन हाज़िर थे :

जत्थेदार तेजा सिंघ जी, संत तेजा सिंघ जी, ग्रंथी श्री ननकाना साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी "मुसाफर", ज्ञानी नाहर सिंघ जी, सरदार वसावा सिंघ जी, सैक्रेटरी शिरोमणि कमेटी, भाई करतार सिंघ जी झब्बर, सरकार वरियाम सिंघ जी, गर्मूला (मैंबर इंचार्ज ननकाना साहिब), भाई प्रताप सिंघ जी पुस्तकां वाले, सरदार लाल सिंघ जी (शिरोमणि कमेटी), जत्थेदार मोहन सिंघ जी (श्री अकाल तख्त साहिब) आदि।

इसके उपरांत कई सज्जनों के ज़ोर देने पर प्रारूप पर पुन: विचार करने के लिए रहु-रीति कमेटी की एक अन्य बैठक २६ सितम्बर, १९३२ को हुई। इसमें नीचे लिखे सदस्य हाज़िर थे :

ज्ञानी शेर सिंघ जी, ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, ज्ञानी हमीर सिंघ जी, भाई लाभ सिंघ जी ग्रंथी श्री दरबार साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी मुसाफर, भाई जोगिंद्र सिंघ जी (मीत जत्थेदार, तख्त श्री केसगढ़ साहिब), जत्थेदार तेजा सिंघ जी, ज्ञानी नाहर सिंघ जी और दास, कनविनर।

इनके अतिरिक्त संत तेजा सिंघ जी एम॰ ए॰ भी विचार-विमर्श में हिस्सा लेते रहे। कमेटी ने बहुत ध्यानपूर्वक सारे प्रारूप पर विचार किया। इसको अच्छी तरह संशोधित किया।

अब यह मसौदा रहु-रीत कमेटी की ओर से शिरोमणि कमेटी को पेश किया जाता है। कृपा करके इस मसौदे को छपवा कर संगत की सेवा में अंतिम बार राय देने के लिए भेजें। साथ ही इस मसौदे पर विचार करने के लिए और अंतिम स्वीकृति प्रदान करने के लिए शिरोमणि कमेटी का विशेष सत्र बुलाया गया।

१ अक्तूबर, १९३२

दास,
तेजा सिंघ
कनविनर, रहु-रीत कमेटी।

प्रारूप संबन्धी राय भेजने वाले सज्जनों व सभाओं की सूची

रहु-रीत के प्रारूप संबंधी राय भेजने वाले सज्जनों के नाम :

(१) भाई सज्जन सिंघ जी, मुहाफिज़ दफ्तर, गुरुद्वारा श्री हज़ूर साहिब जी, नांदेड़।

(२) सरदार हज़ारा सिंघ जी, ठेकेदार भवानीगढ़, (पटियाला गवर्नमैंट)।

(३) ज्ञानी हीरा सिंघ जी, "दर्द" लाहौर।

(४) भाई हरनाम सिंघ जी "नाचीज़", गाँव नौशहरा, सून सकेसर, ज़िला शाहपुर।

(५) भाई प्रताप सिंघ जी, पुस्तकों वाले, अमृतसर।

(६) भाई राम सिंघ जी, डेरा बाबा मिशरा सिंघ, चौक लछमणसर, अमृतसर।

(७) ज्ञानी नाहर सिंघ जी 'असली कौमी दर्द' अमृतसर। (पहला मसौदा)

(८) ज्ञानी नाहर सिंघ जी, "असली कौमी दर्द" अमृतसर। (दूसरी बार का)।

(९) सरदार गंडा सिंघ जी, जमादार पैंशनर, एग्ज़ामीनर नकल फारसी, दफ्तर डी॰ सी॰, जालंधर शहर।

(१०) वैद्य नौरंग सिंघ, गुरबचन सिंघ जी, "तांघी", अमृतसर।

(११) भाई मेला सिंघ जी, गुरुद्वारा चुरस्ती अटारी, अमृतसर।

(१२) भाई साहब भाई काहन सिंघ जी, सरदार बहादुर नाभा ।

(१३) एक प्रेमी सज्जन ।

(१४) एक प्रेमी सज्जन ।

(१५) संत टहल सिंघ जी, मजीठा (अमृतसर) ।

(१६) भाई नारायण सिंघ जी, मसीत पलकोट, डा॰ गढ़दीवाला (होशियारपुर) ।

(१७) भाई उत्तम सिंघ जी, चिटागांग (बंगाल), डॉ॰ रेलवे बल्डिग, चिटागांग ।

(१८) एडीटर, 'खालसा' व 'खालसा एडवोकेट', अमृतसर ।

(१९) भाई अमरीक सिंघ जी, चूने वाले, गुजरांवाला ।

(२०) संत गुलाब सिंघ जी, 'खालसा' आनंद भवन, मोगा (फिरोज़पुर) ।

(२१) ज्ञानी हीरा सिंघ जी, ढुडयाल (जेहलम) ।

(२२) भाई नंद सिंघ जी, इंजीनियर द्वारा बाबा बख्तावर लाल शर्मा, बठिंडा ।

(२३) मास्टर बचन सिंघ जी "बचन" सिधवां कलां (लुधियाना) ।

(२४) भाई बिशन सिंघ जी सुहाणा, ज्ञानी, दोआबा खालसा हाई स्कूल, जालंधर ।

(२५) भाई नाजम सिंघ जी सुधार, दीनापुर (पटना) ।

(२६) संत गुलाब सिंघ जी घोल्यिा, मोगा ।

(२७) सरदार गंडा सिंघ जी, "जाचक" अमृतसर ।

(२८) मास्टर पूर्ण सिंघ जी आनंदपुरी, चौक करोड़ी, अमृतसर ।

(२९) ज्ञानी बचित्तर सिंघ जी, द्वारा खालसा ट्रेडिंग एजेंसी, कलकत्ता ।

(३०) भाई त्रिप्त सिंघ जी, नागोकी सरली (अमृतसर) ।

(३१) ज्ञानी रण सिंघ जी, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, मोरपुर, बरास्ता जेहलम ।

(३२) भाई चतर सिंघ जी, गुरुद्वारा सारंबान शहर, मलाया द्वीप ।

(३३) भाई ठाकर सिंघ जी "संसार", गाँव फतेहगढ़ घनैया डा॰ खास गुरदासपुर ।

(३४) पंडित करतार सिंघ जी, दाखा (लुधियाना) ।

(३५) भाई प्रेम सिंघ जी ज्ञानी, खालसा हाई स्कूल, कल्लर (रावलपिंडी) ।

(३६) भाई गुरदित्त सिंघ जी "दरस", चक नं॰ १३२, डा॰ खास मुल्तान ।

(३७) भाई सुन्दर सिंघ जी, दुबेरन (रावलपिंडी) ।

(३८) ज्ञानी भगत सिंघ जी, खालसा हाई स्कूल, बाबा बकाला (अमृतसर)।

(३९) भाई सरन सिंघ जी ग्रंथी, गुरुद्वारा रतन तला, श्री गुरु सिंघ सभा, कराची।

(४०) भाई छहिबर सिंघ जी, हैडमास्टर, खालसा उपदेशक कालेज, (यतीमखाना, घरजाख गुजरांवाला)।

(४१) भाई मल सिंघ जी खोसला, कश्मीर स्टेट।

(४२) डॉ॰ तेजा सिंघ जी ज्ञानी, फतेह चक (तरनतारन)।

(४३) भाई गुरमुख सिंघ जी ग्रंथी, बढ़ूँदी (लुधियाना)।

(४४) भाई मोहन सिंघ जी वैद्य, तरनतारन (अमृतसर)।

(४५) भाई जोध सिंघ जी, 'कृपान बहादुर', अलोवाल (मलाया स्टेट)।

(४६) भाई प्रेम सिंघ जी पैन्शनर, माँगट (गुजरात)।

(४७) भाई महां बलबीर सिंघ जी अकाली, गाँव पत्तो सिंघ वाली, डा॰ खास फिरोज़पुर।

(४८) भाई मनोहर सिंघ जी, पूर्व हैड क्लर्क, स्थानीय गुरुद्वारा कमेटी, अमृतसर।

(४९) भाई महिंद्र सिंघ जी, प्रधान, गुरुद्वारा कमेटी, समाध भाई, गाँव अणूके (फिरोज़पुर)।

(५०) भाई गुरबचन सिंघ जी Ketrygess M.P. nett Jormun'e B. Sc.

रहु-रीत के प्रारूप सम्बन्धी

निम्नलिखित पंथक जत्थेबंदियों की ओर से राय पहुंची :

(१) गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, खडूर साहिब (अमृतसर)।

(२) खालसा कमेटी (स्कूल), होती।

(३) श्री गुरु सिंघ सभा, गुजरांवाला।

(४) सिख स्त्री शैक्षणिक कमेटी, शंकर (जालंधर)।

(५) संगत तख्त श्री केसगढ़ साहिब, आनंदपुर।

(६) श्री गुरु सिंघ सभा, गुजरखान।

(७) श्री गुरु सिंघ सभा, चक झमरा मंडी (लायलपुर)।

(८) श्री गुरु सिंघ सभा, कुंतरीला (रावलपिंडी)।

(९) अकाली जत्था शहर, अमृतसर।

(१०) सिख टीचर्ज़ एसोसिएशन, खालसा स्कूल, खारया (गुजरात)।

(११) खालसा सैंट्रल दीवान, शिरोमणि पंथ मलौणी जत्था, माझा।

(१२) श्री गुरु सिंघ सभा, ढुढयाल (जेहलम)।

(१३) श्री गुरु सिंघ सभा, बम्बई।

(१४) गुरु नानक खालसा मिडल स्कूल, डेरा साहिब, जामा राय।

(१५) खालसा दीवान, लाहौर छावनी।

(१६) सैंट्रल सिख नौजवान सभा, बर्मा फौजी। (एस॰ एस॰ एस॰) तथा खालसा दीवान बर्मा।

(१७) सचिव, अकाली जत्था, तहसील अम्बाला।

(१८) श्री गुरु सिंघ सभा, खुशाब (सरगोधा)।

(१९) पैस्फिक कोस्ट खालसा दीवान, स्टाकटन (अमरीका)।

(२०) गुरुद्वारा कमेटी, मोमयो (बर्मा)।

(२१) जत्थेदार बुद्ढा दल निहंग सिंघां चलता वहीर, धोबी मंडी, लाहौर।



१ ओंकार (੧ੳ) सतिगुर प्रसादि ॥

सिख रहित मर्यादा

(आचार संहिता)

सिख की परिभाषा

जो स्त्री या पुरुष एक अकालपुरुख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दस गुरु साहिबान की बाणी व शिक्षा और दशमेश जी के अमृत पर निश्चिय रखता है और किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिख है ।

सिख का जीवन दो तरह का है—व्यक्तिगत और पंथक ।

व्यक्तिगत जीवन

(१) नाम बाणी का अभ्यास ।

(२) गुरमति अनुकूल जीवन ।

(३) सेवा ।

(१) नाम बाणी का अभ्यास

१. सिख अमृत बेला में (पहर रात रहते) जाग कर स्नान करे और एक अकालपुरुख का ध्यान करते हुए "वाहिगुरु" नाम का जाप करे ।

२. नितनेम का पाठ करे । नितनेम की बाणियां ये हैं :

जपु, जापु और १० सवैये ('स्रावग सुध' वाले)—ये बाणियां अमृत बेला में पढ़नी हैं ।

सोदरु रहरासि—शाम के समय सूर्य डूबने के समय पढ़नी चाहिए । इसमें ये बाणियां शामिल हैं :

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में लिखे हुए नौ शब्द (**"सोदरु"** से ले कर **"सरणि परे की राखहु सरमा"** तक) विनती चौपई पातशाहां १० (**"हमरी करो हाथ दै**

रच्छा" से ले कर **"दुष्ट दोख ते लेहु बचाई"** तक, सवैया **'पाइ गहे जब ते तुमरे"** और दोहरा **"सगल दुआर कउ छाडि कै")** अनंद की पहली पांच पउड़ियां और अंतिम एक पउड़ी[1], मुंदावणी तथा श्लोक महला ५ **"तेरा कीता जातो नाहीं"**।

सोहिला—यह बाणी रात को सोते समय पढ़नी है। अमृतबेला में और सोदरु के समय के नितनेम के उपरांत अरदास करना ज़रूरी है।

३. (क) अरदास[2] यह है :

अरदास

ੴ वाहिगुरु जी की फतेह ॥
सिरी भगौती जी सहाय ॥
वार सिरी भगौती जी की पातशाही १० ॥
पृथम भगौती सिमर कै गुर नानक लई ध्याय।
फिर अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होई सहाय।
अर्जुन हरिगोबिंद नौ सिमरौ सिरी हरिराय ॥
सिरी हरिकरिशन धिआइयै जिस डिठै सभ दुख जाय ॥
तेग बहादुर सिमरियै घर नउ-निधि आवै धाय।
सभ थाईं होय सहाय
दसवें पातशाह, सिरी गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी,
सभ थाईं होय सहाय।
दसां पातशाहियाँ दी जोत सिरी गुरु ग्रंथ साहिब जी दे
पाठ दीदार दा ध्यान धर के, बोलो जी वाहिगुरु !
पंजाँ प्यारियाँ, चौहाँ साहिबज़ादियाँ,
चालीआँ मुकतिआँ, हठीआँ, जपीआँ, तपीआँ,
जिन्हाँ नाम जपिआ,
वंड छकिया, देग चलाई तेग वाही,

---

१. इस अवसर पर या दीवान की समाप्ति पर जो अनंद साहिब का पाठ किया जाता है, उसका भाव केवल गुरु साहिब के मिलाप के लिए खुशी तथा धन्यावाद करना होता है।

२. यह अरदास का नमूना है। पृथम भगौती वाले शब्द और 'नानक नाम' वाली अंतिम दो तुकों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

देख के अणडिट्ठ कीता,
तिन्हाँ प्यारिआँ, सचिआरिआँ
दी कमाई दा ध्यान धर के
खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरु !!
जिन्हा सिंघाँ-सिंघणियाँ ने धर्म हेत सीस दित्ते,
बंद बंद कटाये, खोपड़ियाँ लुहाइयाँ,
चरखीआँ ते चढ़े, आरिआँ नाल चिराए गये,
गुरद्वारिआँ दी सेवा लई कुर्बानियाँ कीतीआँ,
धर्म नहीं हारिआ, सिखी केसाँ सुआसाँ नाल निबाही,
तिनाँ: दी कमाई दा ध्यान धर के,
खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरु !
पंजां तख्तां, सर्बत्त गुरद्वारिआँ दा ध्यान धर के,बोलो जी वाहिगुरु !!
पृथमे सर्बत्त खालसा जी की अरदास है जी,
सर्बत्त खालसा जी को
वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु चित आवे,
चित आवन का सदका सर्व सुख होवे,
जहाँ जहाँ खालसा जी साहिब तहाँ तहाँ रछिआ रिआयत,
देग तेग फतेह, बिर्द की पैज,
पंथ की जीत, सिरी साहिब जी सहाय,
खालसे जी के बोल बाले,
बोलो जी वाहिगुरु !
सिखाँ नूँ सिखी दान, केस दान, रहित दान
,बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानाँ सिर दान,
नाम दान, सिरी अमृतसर जी दे इश्नान,
चौंकीयाँ, झंडे, बुंगे, जुगो जुग अटल,
धर्म का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु !!!
सिखां दों मन नीवां, मत उच्ची
मत का राखा आप वाहिगुरु !

हे अकाल पुरख, आपणे पंथ दे संदा सहाई दातार जीओ !
सिरी ननकाणा साहिब ते होर गुरुद्वारिआ गुरधामाँ दे,
जिन्हां तों पंथ नूँ विछोड़िया गया है,
खुले: दर्शन दीदार ते सेवा संभाल दा दान
खालसा जी नूँ बख्शो।
हे निमाणिआं दे माण, निताणिआं दे ताण,
निओटिआँ दी ओट, सच्चे पिता वाहिगुरु !
आप दे हजूर ....[1] अरदास है जी।
अखर वाधा घाटा, भुल-चुक माफ करनी।
सर्बत्त दे कारज रास करने।
सेई प्यारे मेल, जिनाँ: मिलिआँ तेरा नाम चित्त आवे।
नानक नाम चढ़दीकला, तेरे भाणे सर्बत्त दा भला।[2]

(ख) अरदास के समय संगत में हाज़िर सारे स्त्री-पुरुषों को हाथ जोड़कर खड़ा होना चाहिए। जो सज्जन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में बैठा हो, वह भी उठ कर चवर करे।

(ग) अरदास करने वाला श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख खड़ा होकर, हाथ जोड़कर अरदास करे। यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब मौजूद न हों तो किसी दिशा में भी मुँह करके अरदास करो, स्वीकार्य है।

(घ) जब कोई खास अरदास, किसी एक या अधिक आदमियों की ओर से हो, तो उन (व्यक्तियों) के अतिरिक्त संगत में बैठे दूसरे लोगों का उठना ज़रूरी नहीं।

---

१. यहाँ पर उस बाणी का नाम लो, जो पढ़ी है या जिस कार्य हेतु संगत एकत्र हुई है, उसका वर्णन योग्य शब्दों में करो।

२. इसके पश्चात् अरदास में शामिल होने वाली सारी संगत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे अदब से मत्था टेके फिर खड़े हो कर—

"वाहिगुरु जी का खालसा,
वाहिगुरु जी की फतेह॥"

बुलाये। उपरांत "सत सिरी अकाल" का जयकारा लगाया जाये।

४. साध संगत में जुड़ कर गुरबाणी का अभ्यास

गुरुद्वारे

(क) गुरबाणी का असर साध-संगत में बैठने से अधिक होता है। इसलिए सिख के लिए उचित है कि सिख संगत के जोड़ मेले के स्थानों (जहां पर संगत मिल बैठती है) गुरुद्वारों के दर्शन करे और साध संगत में बैठ कर गुरबाणी से लाभ उठाये।

(ख) गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नित्य प्रति हो। बिना खास कारण के (जब कि प्रकाश जारी रखने की आवश्यकता हो) रात को प्रकाश न रहे। आम तौर पर रहरासि के पाठ के पश्चात् सुखासन किया जाये। जब तक ग्रंथी या सेवादार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सेवा के लिए हाज़िर रह सके या पाठियों, दर्शन करने वालों का आना-जाना रहे या बेअदबी का ख़तरा न हो, तब तक प्रकाश रहे। उपरांत सुखासन कर देना उचित है ताकि बे-अदबी न हो।

(ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का सम्मान से प्रकाश (स्थापन) किया जाये। पढ़ा व संतोखा (संभाला) जाये। (गुरु ग्रंथ साहिब के) प्रकाश के लिए ज़रूरी है कि स्थान साफ़-सुथरा हो। ऊपर चाँदनी हो। प्रकाश, मंजी साहिब (खटोला) पर साफ़-सुथरे वस्त्र बिछा कर किया जाये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को संभाल कर प्रकाश करने के लिए गदेले आदि सामान का प्रयोग किया जाये व ऊपर (ढकने के लिए) रुमाल हो। जब पाठ न हो रहा हो, तो ऊपर से (गुरु ग्रंथ साहिब) रुमाल से ढका रहे। प्रकाश के समय चवर भी करनी चाहिए।

(घ) ऊपर बताये गये सामान के अतिरिक्त धूप या दीपक जगा कर आरती करना, भोग लगाना, ज्योतियाँ जगाना, घंटे बजाने आदि कर्म गुरमति अनुसार नहीं। हाँ, स्थान को सुगंधित करने के लिए फूल-धूप आदि सुगंधियों का प्रयोग विवर्जित नहीं। कमरे में रोशनी के लिए तेल, घी या मोमबत्ती, बिजली, लैंप आदि जगा लेने चाहिएं।

(ङ) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के तुल्य किसी पुस्तक को स्थापित नहीं करना चाहिए। गुरुद्वारे में कोई मूर्ति पूजा या और गुरमति के विरुद्ध कोई रीति या संस्कार न हो, न ही कोई पराधर्मी त्योहार मनाया जाये। हाँ, किसी अवसर या समूह को गुरुमति के प्रचार के लिए प्रयोग करना अनुचित नहीं।

(च) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पंघूड़े (खटोले) के पावों को मुट्ठियाँ भरना, दीवारों या थड़ों पर नाक रगड़ना या मुट्ठी चापी करना, मंजी साहिब के नीचे पानी रखना, गुरुद्वारों में मूर्तियाँ (बुत्त) बनाना या रखना, गुरु साहिबान या सिख बज़ुर्गों की तस्वीरों के आगे माथा टेकना, इस प्रकार के कर्म मनमत हैं।

(छ) एक स्थान से दूसरे स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब ले जाते समय अरदास करनी चाहिए। जिसने सिर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी उठाया हो, वह नंगे पैर चले, पर यदि किसी अवसर पर जूते पहनना अति आवश्यक हो जाये तो कोई भ्रम नहीं करना चाहिए।

(ज) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश (संस्थापन) अरदासा सोध कर किया जाये। प्रकाश करते समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से एक शब्द का वाक् लिया जाये।

(झ) जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सवारी आये तो चाहे पहले (बीड़ का) प्रकाश हुआ हो या नहीं, हर एक सिख को सम्मान के लिए उठकर खड़ा होना चाहिए।

(ट) गुरुद्वारे में जाते समय जूते बाहर उतार कर, साफ़ हो कर जाना चाहिए। यदि पैर मैले-गंदे हों, तो जल से धो लेने चाहिएँ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब अथवा गुरुद्वारे को अपने दायं ओर रख कर परिक्रमा करनी चाहिए।

(ठ) गुरुद्वारे में दर्शनार्थ जाने के लिए किसी देश, मज़हब, जाति वाले को मनाही नहीं, पर उस के पास, सिख धर्म में विवर्जित तम्बाकू आदि कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए।

(ड) गुरुद्वारे में जा कर सिख का पहला कर्म श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे माथा टेकना है। उपरांत गुरु रूप संगत के दर्शन करके सहज से **"वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह"** बुलाई जाये।

(ढ) संगत में बैठने के लिए भी सिख-असिख, छूतछात, जाति-पात, ऊंच-नीच का भ्रम या भेदभाव नहीं करना।

(ण) किसी मनुष्य का सतिगुरु साहिबान के प्रकाश के समय या संगत में गदेला, आसन, कुर्सी, चौकी, खटिया आदि लगाकर बैठना या किसी और भेदभाव से बैठना मनमत है।

(त) संगत में या सतिगुरु के प्रकाश के समय किसी सिख को नंगे सिर नहीं

बैठना चाहिए। संगत में सिख स्त्रियों के लिए **पर्दा करना या घूंघट करना** गुरमति विरुद्ध है।

(थ) **तख्त पांच हैं :**

(१) श्री अकाल तख्त साहिब, अमृतसर।

(२) तख्त श्री पटना साहिब, पटना साहिब (३) तख्त श्री केसगढ़ साहिब, आनंदपुर।

(४) तख्त श्री हज़ूर साहिब, नांदेड़।

(५) तख्त श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो)।

(द) तख्तों के खास स्थान पर केवल रहितवान अमृतधारी (सिंघ या सिंघणी) ही चढ़ सकते हैं।

(तख्तों पर पतित तथा तनखाहिये-दंडनीय) सिख के बिना, हर एक प्राणी मात्र, सिख, ग़ैर सिख की अरदास हो सकती है।)

(ध) हर एक गुरुद्वारे में निशान साहिब (धर्म पताका) किसी ऊँचे स्थान पर लगा हो। निशान साहिब के पोशाके का रंग बसंती या सुरमई हो और निशान साहिब के सिरे पर सर्वलौह का भाला या खंडा हो।

(न) गुरुद्वारे में नगारा हो, जो समय-समय पर बजाया जाये।

कीर्तन

(क) संगत में कीर्तन **केवल सिख** ही कर सकता है।

(ख) कीर्तन गुरबाणी को रागों में उच्चारण करने को कहते हैं।

(ग) संगत में कीर्तन केवल गुरबाणी या इसकी व्याख्या स्वरूप रचना भाई गुरदास जी और भाई नंद लाल जी की बाणी का हो सकता है।

(घ) शब्दों को जोटियों की धारणा या राग से पढ़ते हुए बाहर की मन घड़ंत तथा अतिरिक्त पंक्तियां लगा कर, धारना लगाना या गायन करना अनुचित है। शब्द की पंक्ति को ही धारणा बनाया जाये।

हुकम लेना

(क) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख माथा टेकना, गुरु रूप संगत के अदब से दर्शन करने तथा आवाज़ा लेना या सुनना, सतगुरु के "दर्शन" हैं। वाक् लिये

बिना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का रूमाला उठा कर दर्शन करना या करवाना मनमत है ।

(ख) संगत में एक समय पर, एक ही बात होनी चाहिए कीर्तन या कथा, व्याख्यान या पाठ ।

(ग) दीवान के समय संगत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया (हज़ूरी में) केवल सिख (मर्द या स्त्री) ही बैठने के अधिकारी हैं ।

(घ) संगत को पाठ केवल सिख ही करके सुनाये । अपने लिए पाठ कोई ग़ैर सिख भी कर सकता है ।

(ङ) "हुक्म" लेते समय बायें पृष्ठ के ऊपर की तरफ से पहला शब्द जो जारी है, प्रारंभ से पढ़ना चाहिए ।

यदि वह शब्द पूर्व पृष्ठ से आरंभ होता है तो पृष्ठ पलट कर पढ़ना शुरू करो और शब्द सारा पढ़ो । यदि "वार" हो तो पउड़ी के सारे श्लोक तथा पउड़ी पढ़नी चाहिए । शब्द के अंत में जहां "नानक" नाम आ जाये, उस पंक्ति पर भोग डाला जाये ।

(च) दीवान की समाप्ति या भोग का अरदासा हो कर अंतिम "हुक्म" लिया जाये ।

सहज पाठ

(क) हर एक सिख को बस लगे, अपने घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश करने का अलग तथा एकांत स्थान निश्चित करना चाहिए ।

(ख) हर एक सिंघ सिंघणी, बच्चे बच्ची को गुरमुखी पढ़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ करना सीखना चाहिए ।

(ग) हर एक सिख अमृत बेला में प्रसाद (भोजन) सेवन करने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का "हुक्म" ले । यदि इस में उकाई हो जाये, तो दिन में किसी न किसी समय ज़रुर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करे या सुने । यात्रा आदि तथा विपत्ति के समय दर्शन करने से असमर्थ हों, तो शंका नहीं करनी ।

(घ) अच्छा तो यह है कि हर एक सिख अपना सहज पाठ जारी रखे और महीने दो महीने पश्चात् (या जितने समय में हो सके) भोग डाले ।

(ङ) पाठ आरंभ करते समय आनंदु साहिब (पहली पांच पउड़ियां तथा एक

अंतिम पउड़ी) के पाठ के पश्चात् अरदासा करके हुक्म लेना चाहिए। फिर जपु साहिब का पाठ करना चाहिए।

अखंड पाठ

(क) अखंड पाठ किसी विपत्ति या उत्साह के समय किया जाता है। यह लगभग ४८ घंटे में संपूर्ण किया जाता है। इसमें पाठ लगातार बिना रुके किया जाता है। पाठ साफ़ तथा शुद्ध हो। बहुत तेज़ पढ़ना, जिससे सुनने वाला कुछ समझ न सके, गुरबाणी का निरादर है। अक्षर मात्र ध्यान रख कर पाठ शुद्ध तथा साफ़ करना चाहिए, चाहे समय कुछ अधिक लग जाय।

(ख) अखंड पाठ जिस परिवार या संगत ने करना है, वह स्वयं करे, परिवार के किसी आदमी, नाती-संबंधी, मित्र आदि मिल कर करें। पाठियों की संख्या निश्चित नहीं।

यदि कोई आदमी स्वयं पाठ नहीं कर सकता, तो किसी अच्छे पाठी से सुन ले, पर यह न हो कि पाठी स्वयं अकेला बैठ कर पाठ करता रहे और संगत या परिवार का कोई आदमी न सुनता हो। पाठी की यथाशक्ति भोजन, वस्त्र आदि द्वारा उचित सेवा की जाये।

(ग) अखंड पाठ या और किसी तरह के पाठ के समय कुंभ, ज्योति, नारियल आदि रखना या साथ के साथ या बीच बीच में किसी और बाणी का पाठ जारी रखना मनमत है।

अखंड पाठ का आरंभ

सहज पाठ के आरंभ के समय कड़ाह प्रसाद ला कर आनंदु साहिब (छः पउड़ियां) का पाठ करके अरदास के पश्चात् "हुक्म" लिया जाये। अखंड पाठ के समय कड़ाह प्रसाद हो, फिर आनंद साहिब (छः पउड़ियों) के पाठ के पश्चात् अरदास करके और "हुक्म" ले कर पाठ का आरंभ किया जाये।

भोग

(क) श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ (सहज या अखंड) का भोग मुँदावणी पर या रागमाला पढ़कर, प्रचलित स्थानीय रीति के अनुसार डाला जाये। (इस के बारे में पंथ में अभी तक मतभेद है, इसलिए रागमाला के बिना श्री गुरु ग्रंथ साहिब

जो की बीड़ लिखने या छापने का साहस कोई न करे)। इसके उपरांत अनंदु साहिब का पाठ करके भोग का अरदासा किया जाये और कड़ाह प्रसाद बाँटा जाये।

(ख) भोग के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आवश्यकतानुसार रुमाल, चवर, चानणी आदि की भेंट और पंथक कामों के लिए यथाशक्ति "अरदास" कराई जाये।

कड़ाह प्रसाद

(क) कड़ाह प्रसाद, जो विधि अनुसार तैयार करके या करवा कर लाया जाये, संगत में स्वीकार्य होगा।

(ख) कड़ाह प्रसाद तैयार करने के विधि यह है—स्वच्छ बर्तन में त्रिभावली (आटा, उत्तम मीठा और घी एकसमान मात्रा में डालकर) गुरबाणी का पाठ करते हुए तैयार किया जाये। फिर स्वच्छ वस्त्र से ढक कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हज़ूर स्वच्छ चौकी पर रखा जाये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हज़ूर संगत को ऊंची आवाज में सुना कर अनंदु साहिब की पहली पांच पउड़ियां तथा अंतिम एक पउड़ी का पाठ[1] किया जाये और अरदासा किए जाने के पश्चात् स्वीकृति के लिए कृपाण भेंट हो।

(ग) इसके उपरांत संगत को बांटने से पूर्व कड़ाह में से पांच प्यारों का गफा (हिस्सा) निकाल कर बांटा जाये। उपरांत संगत में बांटते समय पहले (श्री गुरु ग्रंथ साहिब की) हज़ूरी में बैठे सिंघ को कटोरे में डाल कर दें और फिर बाकी संगत को बाँटे। किसी लिहाज़ या घृणावश भेदभाव न करे। सब सिख, गैर सिख, नीच-ऊँच जाति वाले को एक समान बांटे। कड़ाह प्रसाद बांटते समय संगत में बैठे किसी मनुष्य को जाति-पात, छूआछात का ख्याल करके ग्लानि नहीं करनी चाहिए।

(घ) कड़ाह प्रसाद भेंट करते समय कम से कम ऐक टका नकद अरदास भी हो।

---

१. एक बार आनंद साहिब का पाठ हो चुकने के पश्चात् फिर कड़ाह-प्रसाद की देग आ जाये तो अनंदु साहिब का पाठ बार बार नहीं करना। कृपाण भेंट करना ही काफी है।

५. गुरबाणी की कथा

(क) संगत में गुरबाणी की कथा सिख ही करे।

(ख) कथा का मनोरथ गुरमति दृढ़ करवाना ही हो।

(ग) कथा दस गुरु साहिबान की बाणी या भाई गुरदास भाई नंद लाल सिंघ या किसी और प्रमाणित पंथक पुस्तक या इतिहास की पुस्तकों (जो गुरमति अनुकूल हों) की हो सकती है, पर किसी पराधर्मी पुस्तक की नहीं हो सकती। हां प्रमाण किसी महात्मा या पुस्तक की उत्तम शिक्षा का लिया जा सकता है।

६. व्याख्यान :

गुरुद्वारे में गुरमत के विरुद्ध कोई व्याख्यान नहीं हो सकता।

७. गुरुद्वारे में संगत का प्रोग्राम आमतौर पर इस प्रकार होता है :

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश, कीर्तन, कथा, व्याख्यान, अनंदु साहिब, अरदास, फतेह, सति श्री अकाल का जयकारा तथा हुक्म।

(२) गुरमति का जीवन

१. सिख का आम जीवन, परिश्रम, रोज़गार, गुरमति के अनुसार हो। गुरमति यह हैं—

(क) एक अकालपुरुख के अतिरिक्त किसी देवी देवता की उपासना नहीं करनी।

(ख) अपनी मुक्ति का दाता तथा इष्ट केवल दस गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दस गुरु साहिबान की बाणी को मानना।

(ग) दस गुरु साहिबान को एक ज्योति का प्रकाश एक रूप करके मानना।

(घ) जातिपात, छूआछात, जंत्र-मंत्र-तंत्र, शगुन, तिथि, महूरत, ग्रह, राशि, श्राद्ध, पित्तर, खिआह, पिंड, पत्तल, दिया, क्रिया क्रम, होम, यज्ञ, तर्पण, सिखासूत, भद्दण, एकादशी, पूर्णिमा आदि के वृत, तिलक जनेऊ, तुलसी माला, गौर, मठ मढ़ियों, मूर्तिपूजा आदि भ्रम रूप कर्मों पर निश्चय नहीं करना चाहिए।

गुरु स्थान के बिना किसी पराधर्मी तीर्थ या धाम को अपना स्थान नहीं मानना।

पीर, ब्राह्मण, पुच्छणा, सुखना, शीरनी. देव शास्त्र, गायत्री, गीता, कुरान, अंजील आदि पर निश्चय नहीं करना। हाँ, आम जानकारी के लिए पराधर्मी ग्रंथों को पढ़ना उचित है।

(ङ) खालसा सारे मतों से न्यारा रहे, परन्तु किसी पराधर्मी का दिल न दुखावे।

(च) हर एक काम करने पूर्व वाहिगुरु के सम्मुख अरदास करे।

(छ) सिख के लिए गुरमुखी विद्या पढ़ना ज़रूरी है और विद्या भी पढ़े।

(ज) संतान को गुरसिखी की विद्या दिलवाना, सिख का कर्तव्य है।

(झ) केश लड़के के जो हों उनका बुरा न माने। केश[1] वही रखे, नाम "सिंघ" रखे। सिख अपने लड़के-लड़कियों के केश साबुत रखे।

(ट) सिख भांग, अफीम, शराब, तंबाकू आदि नशों का प्रयोग न करे। अमल प्रशादे (रोटी, भोजन) का ही रखे।

(ठ) सिख मर्द अथवा स्त्री की नाक-कान छेदना मना है।

(ड) गुरु का सिख कन्या न मारे, कुड़ी-मार (कन्या मारने वाले) से व्यवहार न रखे।

(ढ) गुरु का सिख धर्म की कमाई करके निर्वाह करे।

(ण) गुरु का सिख गरीब की रसना को गुरु की गोलक जाने।

(त) चोरी यारी न करे, जूआ न खेले।

(थ) पर बेटी को बेटी जाने। पर स्त्री को मात बखाने।

आपणी स्त्री सों रत होई। रहितवान गुर का सिख सोई।

इसी प्रकार सिख स्त्री अपने पतिव्रत धर्म में रहे।

(द) गुरु का सिख जन्म से ले कर देहांत तक, गुर मर्यादा करे।

(ध) सिख, सिख को मिलते समय **"वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह"** बुलाये। मर्द-स्त्री दोनों के लिए यही हुक्म है।

(न) सिख स्त्रियों के लिए पर्दा या घूंघट करना उचित नहीं।

(प) सिख के लिए कछिहरे तथा दस्तार के अतिरिक्त पोशाक संबंधी कोई पाबंदी नहीं। सिख स्त्री दस्तार सजावे या नहीं सजावे, दोनों ठीक हैं।

१. जन्म तथा नाम संस्कार

(क) सिख के घर बालक का जन्म होने के पश्चात् जब माता उठने-बैठने तथा स्नान करने के योग्य हो तो (दिनों की कोई गिनती निश्चित नहीं) परिवार तथा

१. पैदायशी।

संबंधी गुरुद्वारे कड़ाह प्रसाद ले कर जायें या करवायें और गुरु जी के हज़ूर "परमेसरि दित्ता बंना" (सोरठि महला पंजवां) "सतिगुर साचे दीआ भेजि" (आसा महला पंजवां) आदि खुशी और धन्यवाद वाले शब्द पढ़ें। उपरांत यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ रखा हो तो पाठ का भोग डाला जाये। फिर वाक् लिया जाय। वाक् के आरंभ के शब्द का जो पहला अक्षर हो, उस से ग्रंथी सिंघ बच्चे का नाम तजवीज़ करे और संगत की स्वीकृति ले कर नाम प्रकट करे। लड़के के नाम के पीछे "सिंघ" शब्द तथा लड़की के नाम के पीछे "कौर" शब्द लगाया जाय। उपरांत अनंदु साहिब (छः पउड़ियां) के पश्चात् बच्चे के नाम संस्कार की खुशी का उचित शब्दों में अरदासा करके कड़ाह प्रसाद बांटा जाये।

(ख) जन्म के संबंध में खाने-पीने में कोई, सूतक का भ्रम नहीं करना क्योंकि—

"जम्मणु मरना हुकमु है भाणै आवै जाइ॥
खाणा पीणा पवित्र है दितोनु रिजक संबाह॥"

(ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूमाले से चोला बना कर (बच्चे को) पहनाना आदि मनमत है।

२. अनंद (विवाह) संस्कार

(क) सिंघ सिंघणी का विवाह, बिना जाति पात, गौत्र का विचार किये होना चाहिए।

(ख) सिख की पुत्री का विवाह सिख से ही हो।

(ग) सिख का विवाह "अनंद" रीति से करना चाहिए।

(घ) लड़की लड़के का विवाह बचपन में करना विवर्जित है।

(ङ) जब लड़की शरीर, मन तथा आचार द्वारा विवाह करने के योग्य हो जाये तो किसी योग्य सिख के साथ "आनंद" पढ़ाया जाये।

(च) "अनंद" से पूर्व कुड़माई की रस्म ज़रूरी नहीं, पर यदि करनी हो तो लड़की वाले किसी दिन संगत जोड़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हज़ूर में अरदासा सोध कर एक कृपाण, कड़ा तथा कुछ मीठा लड़के के दामन में डाल दें।

(छ) "अनंद" का दिन नियत करते समय कोई तिथि, वार, अच्छे बुरे दिन की खोज करने के लिए पत्री वाचना मनमत है। कोई दिन जो दोनों पक्षों को आपस में सलाह करके अच्छा लगे निश्चित कर लेना चाहिए।

(ज) सेहरा, मुकुट या गाना बांधना, पित्तर पूजा, कच्ची लस्सी में पैर डालना, बेरी या जंडी काटनी, घड़ोली भरना, रूठ कर जाना, छंद पढ़ना, हवन करना, वेदी गाढ़नी, वेश्या का नाच, श्राद्ध आदि कर्म मनमत हैं।

(झ) जितने थोड़े आदमी लड़की वाला मंगावे, उतने साथ ले कर लड़का सुसराल घर जाये। दोनों ओर गुरबाणी के शब्द गाये जाये और "फतेह" गजाई जाये।

(ट) विवाह के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हज़ूर दीवान लगे। संगत या रागी कीर्तन करें। फिर लड़की तथा लड़का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हज़ूर बिठाये जाये। लड़की, लड़के के बाईं ओर बैठे। संगत की आज्ञा ले कर "अनंद" पढ़ाने वाला (मर्द या स्त्री) लड़के, लड़की तथा उनके माता-पिता या अभिभावकों को खड़ा करके "अनंद" के आरंभ का अरदासा करे।

फिर वह लड़के लड़की को गुरमत अनुसार गृहस्थ धर्म के कर्त्तव्यों का उपदेश करे।

पहले दोनों को सांझा उपदेश करे। इसमें सूही राग की लावां के भाव अनुसार पति-पत्नी के संबंध, जीवन तथा परमात्मा के प्यार के नमूने पर ढालने की विधि बताये।

आपस में प्रेम द्वारा 'एक जोति दुइ मूर्ति' होना बताये और इस तरह गृहस्थ धर्म निभाते हुए अपने साझे भरता "अकालपुरुख" के संग एकमेव होना दृढ़ करावे। दोनों ने इस संजोग को मानव जन्म की यात्रा को सफलता से निभाने का साधन बनाना है। दोनों ने इस संजोग के द्वारा पवित्र तथा गुरमुखी जीवन बिताना है।

फिर लड़के तथा लड़की को अपने-अपने, अलग-अलग गृहस्थ धर्म के फ़र्ज़ बताये जायें। वर को बताया जाये कि लड़की वालों ने तुम्हें ही सब से अधिक योग्य जान कर वर चुना है। आप ने अपनी पत्नी को अर्द्धांगिनी जान कर हर अवस्था में एक समान प्यार करना है और बांट कर खाना है। इसके शरीर तथा इज्ज़त के रक्षक तुम हो। स्त्रीव्रत धर्म में पक्के रहना। इसके माता पिता तथा संबंधियों को अपने माता-पिता तथा संबंधियों के तुल्य आदर देना।

कन्या को बताया जाये कि आप को श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा संगत के हज़ूर इस सज्जन के दामन लगाया जाता है। आप इनके निर्मल "भउ" में रहते हुए इन को ही अपने सारे प्रेम तथा श्रद्धा का मालिक समझना, दुःख-सुख, देस-परदेस में

अपने पतिव्रत धर्म में पक्के रहना, सेवा करनी। इसके माता-पिता तथा संबंधियों को अपने माता-पिता, संबंधियों की तरह जानना।

उपदेश की बातें स्वीकार करते हुए वर तथा कन्या, दोनों श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे माथा टेके। फिर लड़की के पिता यां मुखी संबंधी लड़के का दामन लड़की के हाथ पकड़वाये तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में बैठे सज्जन सूही महला ४ में दी गयी लावां का पाठ सुनायें। हरेक लांव का पाठ होने के पश्चात, आगे वर पीछे कन्या, वर का दामन पकड़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की चार परिक्रमा करें। परिक्रमा करते समय रागी या संगत, लावां को क्रमानुसार सुर से गाते जायें और **वर कन्या हर एक लांव के पश्चात् माथा टेक कर अगली लांव सुनने के लिए खड़े हो जायें। उपरांत वे माथा टेक कर अपनी जगह पर बैठ** जायें और रागी सिंघ या अनंदु करवाने वाला अनंदु साहिब की पहली पांच पउड़ियां तथा अंतिम एक पउड़ी का पाठ करे। फिर "अनंदु" की समाप्ति का अरदासा किया जाये और कड़ाह प्रसाद बांटा जाये।

(ठ) पराधर्मियों का विवाह अनंद रीति से नहीं हो सकता।

(ड) लड़के या लड़की का संजोग पैसा ले कर न करें।

(ढ) यदि लड़के के माता-पिता सबब से लड़की के ग्रह में जायें और वहां प्रसाद (भोजन) तैयार हो तो खाने से संकोच नहीं करना। अन्न न खाना सब भ्रम है। खालसे को खाना खिलाना श्री गुरु बाबे अकाल पुरुख ने प्रदान किया है। बेटी बेटे वाले आपस में खाते रहें, इसीलिए जो गुरु ने दोनों रिश्ते एक किये हैं।[1]

(ण) जिस स्त्री का भरता (पति) कालवास हो जाये, वह चाहे तो योग्य वर देख कर पुनर्विवाह कर ले। सिख की स्त्री मर जाये तो उस के लिए भी यही हुक्म है।

(त) पुनर्विवाह की भी वही रीति है, जो "अनंद" के लिए ऊपर बतायी गयी है।

(थ) आम हालातों में सिख को एक स्त्री के होते दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए।

(द) अमृतधारी सिंघ को चाहिए कि अपनी सिंघणी को भी अमृतपान करवा ले।

---

१. प्रेम सुमार्ग।

३. मृतक संस्कार

(क) प्राणी को मरते समय यदि चारपाई पर हो तो चारपाई से नीचे नहीं उतारना, दिया-बाती, गाय मणसवाना (दान) या और कोई मनमत संस्कार नहीं करना । केवल गुरबाणी का पाठ करना या "वाहिगुरु, वाहिगुरु" करना ।

(ख) प्राणी के शरीर त्यागने पर दहाड़ नहीं मारनी, पीटना या स्यापा नहीं करना । मन को "वाहिगुरु" की रज़ा में लाने के लिए गुरबाणी का पाठ या "वाहिगुरु" का जाप किये जाना अच्छा है ।

(ग) प्राणी चाहे छोटी से छोटी उम्र का हो, सो भी संस्कारना चाहिए । जहाँ संस्कार का प्रबंध न हो सके, वहां पर जल प्रवाह या और तरीका अपनाने से शंका नहीं करनी ।

(घ) संस्कार करने के लिए दिन या रात का भ्रम नहीं करना चाहिए ।

(ङ) मृतक शरीर को स्नान करवा कर स्वच्छ वस्त्र पहनाये जायें और ककार जुदा न किये जायें । फिर तख्ते पर डालकर "चलाणे" का अरदासा किया जाये । फिर अर्थी को उठा कर श्मशान भूमि की ओर ले जाया जाये । साथ में वैराग्यमय शब्दों का उच्चारण किया जाये । संस्कार की जगह पर पहुंच कर चिता रची जाये । फिर शरीर को अग्निभेंट करने के लिए अरदास की जाये । फिर प्राणी को अंगीठे (चिता) पर रखकर पुत्र या कोई और संबंधी या हितैषी आदि अग्नि लगा दे । संगत कुछ दूरी पर बैठ कर कीर्तन करे या वैराग्यमय शब्द पढ़े । जब अंगीठा (चिता) पूरी तरह जल उठे तो (कपाल क्रिया आदि करना मनमत है) । सोहिले का पाठ कर के अरदासा करके संगत वापिस मुड़ आवे ।

घर आकर या समीप के किसी गुरद्वारे में प्राणी के नमित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ रखा जाये व अनंद साहिब की छः पउड़ियों का पाठ करके अरदास करके, कड़ाह प्रसाद बाँटा जाये । इस पाठ की समाप्ति दसवें दिन हो । यदि दसवें दिन न हो सके तो और कोई दिन संबंधियों की सुविधा को ध्यान में रख कर निश्चित किया जाये । इस पाठ के करने में घर वाले और संबंधी मिलकर हिस्सा लें । यदि हो सके तो रोज़ रात को कीर्तन भी हो । **"दुसहरे" के पश्चात् चलाणे की कोई रस्म बाकी नहीं रहती ।**

(च) मृतक प्राणी का अंगीठा (चिता) ठंडा होने पर, सारी देह की भस्म-अस्थियों सहित उठा कर जल-प्रवाह कर दी जाये या वहीं पर दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाये । संस्कार-स्थान पर मृतक प्राणी की यादगार बनाना मना है ।

(छ) अर्द्ध मास, स्यापा, फूहड़ी, दीपक, पिंड, क्रिया, श्राद्ध, बुड्डा मरना आदि करना, मनमत है। अंगीठे (चिता) में से फूल (अस्थियां) चुन कर गंगा, पतालपुरी, कीरतपुर साहिब आदि स्थानों पर जा कर डालना मनमत है।

४. अन्य रीतियां

इन संस्कारों के अतिरिक्त, समय-समय पर जो भी खुशी-ग़मी का अवसर आ बने, (जैसे नये मकान में प्रवेश करना, नयी दुकान खोलना, बालक को स्कूल डालना आदि) तो सिख को चाहिए कि वाहिगुरु की सहायता के लिए अरदास करे। **सिखी में सारे संस्कारों का जरूरी अंग, बाणी का पाठ तथा अरदासा है।**

५. सेवा

१. सेवा, सिख धर्म का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसको नमूने-मात्र सिखलाने के लिए गुरुद्वारों में ही प्रबंध किया होता है। साधारण रूप इसके ये हैं—गुरुद्वारे का झाड़, लीपापोती, संगत की पानी, पंखे-हवा की सेवा, लंगर की सेवा, जोड़े झाड़ने आदि।

(क) गुरु का लंगर—इसके दो भाव हैं : एक सिखों को सेवा सिखलाना, दूसरा ऊंच-नीच, छूत छात का भ्रम मिटाना।

(ख) गुरु के लंगर में बैठकर ऊंच-नीच, किसी जाति या वर्ण का प्राणी प्रशाद (भोजन) सेवन कर सकता है। पंगत में बिठाते समय किसी देश, वर्ण जाति या मज़हब का भेदभाव नहीं करना। हां, एक थाली में केवल अमृतधारी सिख ही खा सकते हैं।

पंथक रहिणी (जीवन)

१. गुरु पंथ।

२. अमृत संस्कार।

३. तनखाह (दंड) लगाने की विधि।

४. गुरमता (सिख संकल्प) करने की विधि।

५. स्थानीय फ़ैसलों की अपील।

१. गुरु पंथ

सेवा, केवल पंखे, लंगर आदि पर ही समाप्त नहीं हो जाती, सिख का सारा जीवन परोपकार वाला है। सेवा वह सफल है, जो थोड़े यत्न से अधिक से अधिक हो सके। यह बात जत्थेबंदी के द्वारा ही हो सकती है। सिख ने इसके लिए व्यक्तिगत धर्म को निभाते हुए साथ ही पंथक फर्ज़ भी पूरे करने हैं। इस जत्थेबंदी का नाम **'पंथ'** है। हर एक सिख ने **'पंथ'** का एक अंग होकर भी अपना धर्म निभाना है।

(क) **'गुरु पंथ':** तैयार-बर-तैयार सिंघों के समूचे समूह को 'गुरु पंथ' कहते हैं। इसकी तैयारी दस गुरु साहिबान ने की ओर दशम गुरु जी ने इसका अन्तिम स्वरूप बांधकर गुरयाई सौंपी।

२. अमृत संस्कार

(क) अमृत संचार करने के लिए एक खास स्थान पर प्रबंध हो। वहां पर आम रास्ता न हो।

(ख) वहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हो। कम से कम छः तैयार-बर-तैयार सिंघ हाज़िर हों जिनमें से एक ताबिया (गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी) और बाकी पांच अमृतपान करवाने के लिए हों। इनमें सिंघणियाँ भी हो सकती हैं। इन सब ने केश-स्नान किया हो।

(ग) इन पाँच प्यारों में कोई अंगहीन (अंधा, काना, लंगड़ा-लूला) या दीर्घ रोग वाला न हो। कोई तनखाहिया (दंडनीय) न हो। सारे तैयार-बर-तैयार दर्शनी सिंघ हों।

(घ) हर देश, हर मज़हब व जाति के हर एक स्त्री-पुरुष को अमृतपान करने का अधिकार है, जो सिख धर्म ग्रहण करे व उसके असूलों पर चलने का प्रण करे।

बहुत छोटी अवस्था न हो, होश संभाली हो। अमृतपान करते समय हर एक प्राणी ने केश स्नान किया हो और हर एक पाँच ककार (केश, कृपाण (गातरे वाली) कछैहिरा, कंघा, कड़ा) का धारणकर्ता हो। पराधर्म का कोई चिन्ह न हो। सिर नंगा या टोपी न हो। छेदक गहने कोई न हों। अदब से हाथ जोड़कर श्री गुरु जी के हज़ूर खड़े हों।

(ङ) यदि किसी ने कुरहित करने के कारण पुनः अमृतपान करना हो तो उसको अलग करके संगत में पांच प्यारे तनखाह (दंड) लगा लें।

(च) अमृतपान करवाने वाले पाँच प्यारों में से कोई एक सज्जन अमृतपान के अभिलाषियों को सिख धर्म के असूल समझाए :

सिख धर्म में कृतम की पूजा त्याग कर एक करतार की प्रेमाभक्ति व उपासना बताई गई है। इसकी पूर्णता के लिए गुरबाणी का अभ्यास, साध-संगत तथा पंथ की सेवा, उपकार, नाम का प्रेम और अमृतपान करके रहित-बहित रखना मुख्य साधन हैं, आदि। क्या आप इस धर्म को खुशी से स्वीकार करते हो ?

(छ) **'हाँ'** का उत्तर आने पर प्यारों में से एक सज्जन अमृत की तैयारी का अरदासा करके 'हुक्म' ले। पांच प्यारे अमृत तैयार करने के लिए बाटे के पास आ बैठें।

(ज) बाटा सर्वलौह का हो और चौकी, सुनहिरे आदि किसी स्वच्छ वस्त्र पर रखे हों।

(झ) बाटे में स्वच्छ जल व पतासे डाले जायें और पाँच प्यारे बाटे के इर्द-गिर्द बीर आसन[1] लगा कर बैठ जायें।

(ट) और इन बाणियों का पाठ करें :

जपु, जापु, १० सवैये (स्रावग सुध वाले) बेनती चौपई ('हमरी करो हाथ दै रछा' से ले कर 'दुष्ट दोख ते लेहु बचाई' तक), अनंद साहिब।

(ठ) हर एक बाणी पढ़ने वाला बाँया हाथ बाटे के किनारे पर रखें और दायें हाथ से खंडा जल में फेरता जाये। सुरति एकाग्र हो। अनय के दोनों हाथ बाटे के किनारे पर और ध्यान अमृत की ओर टिके।

(ड) पाठ होने के बाद प्यारों में से कोई एक अरदास करे।

(ढ) जिस अभिलाषी ने अमृत की तैयारी के समय सारे संस्कारों में हिस्सा लिया है, वही अमृतपान करने में शामिल हो सकता है। बीच में आने वाला शामिल नहीं हो सकता।

(ण) अब श्री कलगीधर दशमेश पिता का ध्यान कर के हर एक अमृतपान करने वाले को बीर आसन करवा कर उसके बाँये हाथ पर दायाँ हाथ रख कर,

१. बीर आसन : दायाँ घुटना ज़मीन पर रख कर दाईं टाँग का भार पैर पर रख कर बैठना और बायां घुटना ऊँचा करके रखना।

पाँच चुल्ले अमृत के छकाये (सेवन) जायें और हर चुल्ले के साथ यह कहा जाये—
'बोल वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह।'

छक कर कहे : **'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह'**, फिर पांच छीटे अमृत के नेत्रों पर किए जायें, फिर पांच छीटें केशों में डाले जायें। हर एक छीटें के साथ छकने वाला छकाने वाले के पीछे पीछे **'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह'** गजाता जाये। जो अमृत बाकी रहे, उसको सारे अमृत छकने वाले (सिख तथा सिखंनियां) मिल कर छकें।

(प) उपरांत पांचों प्यारे मिल कर, एक आवाज़ से अमृत पान करने वालों को 'वाहिगुरु' गुरमंत्र बताकर, मूल मन्त्र सुनायें और उनसे इसका रटन करवायें।

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु,
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥

(फ) फिर पांच प्यारों में से कोई रहित बतावे—आज से आपने **सतिगुर के जनमे गवनु मिटाइआ** है और खालसा पंथ में शामिल हुए हो। तुम्हारा धार्मिक पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा धार्मिक माता साहिब कौर जी हैं। जन्म आपका केसगढ़ साहिब का है तथा वासी आनंदपुर साहिब की है। तुम एक पिता के पुत्र होने के नाते आपस में और अन्य सारे अमृतधारियों के धार्मिक भ्राता हो। तुम पिछली कुल, कर्म, धर्म का त्याग करके अर्थात् पिछली जात-पात, जन्म, देश, मज़हब का विचार तक छोड़कर, निरोल खालसा बन गये हो। एक अकालपुरुख के अतिरिक्त किसी देवी-देवता, अवतार, पैगंबर की उपासना नहीं करनी। दस गुरु साहिबान को तथा उनकी बाणी के बिना और किसी को अपना मुक्तिदाता नहीं मानना। आप गुरमुखी जानते हो (यदि नहीं जानते तो सीख लो) और हर रोज़ कम से कम इन नितनेम की बाणियों का पाठ करना या सुनना : जपु, जापु, १० सवैये (स्रावग सुद्ध वाले) सोदरु रहरासि तथा सोहिला श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ करना या सुनना, पाँच ककारों—केश, कृपाण[1], कछैहरा[2], कंघा, कड़ा[3] को हर समय अंग संग रखना।

ये चार कुरहितें (विवर्जन) नहीं करने :

१. केशों का अपमान।

---

१. कृपाण की लम्बाई की कोई सीमा नहीं हो सकती।

२. कछैहरा किसी भी कपड़े का हो सकता है पर घुटनों से नीचा न हो।

३. कड़ा (कंगन) सर्वलौह का हो।

२. कुट्ठा[4] खाना।

३. परस्त्री या परपुरुष का गमन (भोगना)।

४. तम्बाकू का प्रयोग।

इनमें से कोई कुरहित हो जाये तो फिर अमृतपान करना होगा। अपनी इच्छा के विरुद्ध अभूल हुई कोई कुरहित हो जाये तो कोई दंड नहीं। सिरगुम[5] नड़ी मार (जो सिख होकर यह काम करे) का संग नहीं करना। पंथ सेवा और गुरुद्वारों की टहल सेवा में तत्पर रहना, अपनी कमाई में से गुरु का दसवां (दशांश) देना आदि सारे काम गुरमति अनुसार करने हैं।

खालसा धर्म के नियमानुसार जत्थेबंदी में एकसूत्र पिरोये रहना, रहित में कोई भूल हो जाये तो खालसे के दीवान में हाज़र हो कर विनती करके तन्ह (दंड) माफ करवाना। भविष्य के लिए सावधान रहना।

तनखाहिये (दंड के भागी) ये हैं :

१. मीणे[6] मसंद, धीरमलिये, रामराइये आदि पंथ विरोधियों या नड़ीमार, कुड़ीमार, सिरगुंम के संग मेल-मिलाप[7] करने वाला तनखाहिया (दंड का भागी) हो जाता है।

२. ग़ैर-अमृतिये या पतित का जूठा खाने वाला।

३. दाहड़ा रंगने वाला।

४. पुत्र या पुत्री का रिश्ता मोल लेकर/देकर करने वाला।

५. कोई नशा (भाँग, अफीम, शराब, पोस्त, कुकीन आदि) का प्रयोग करने वाला।

६. गुरमति के विरुद्ध कोई संस्कार करने करवाने वाला।

७. रहित में कोई भूल करने वाला।

---

४. कुट्ठा से भाव, वह मास है जो मुसलमानी तरीके से तैयार किया हो।

५. केशधारी होकर केश कटवा दे।

६. इनमें से ज़ो अमृतपान करके पंथ में मिल जायें उनके साथ मेल-मिलाप ठीक है।

७. मेल मिलाप से भाव रोटी-बेटी के संबंध से है, जिसका स्पष्ट अर्थ रिश्ता-नाता करके बरादरी का संबंध पैदा करना है। गुरु साहिब का भाव पंथ को एक करके रखने का था ताकि अलग-अलग गुरियाई के सैंटर या मिलावटी सिखी के केन्द्र न बनें।

यह शिक्षा देने के उपरांत पांच प्यारों में सो कोई सज्जन अरदासा करे।

फिर गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी बैठा सिंघ "हुक्म" ले। जिन्होंने अमृतपान किया है, उनमें से यदि किसी का नाम पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से नहीं था रखा हुआ, उसका नाम अब बदल कर रखा जाये।

अंत में कड़ाह प्रशाद बाँटा जाये। जहाज़ चढ़े सारे सिंघ व सिंघणियां एक ही बाटे में से कड़ाह प्रशाद मिलकर सेवन करें।

३. तखाह (दंड) लगाने की विधि

(क) जिस किसी सिख से रहित की कोई भूल हो जाये तो वह समीप की गुर संगत के पास हाजिर हो और संगत के सम्मुख खड़ा हो कर अपनी भूल को माने।

(ख) गुर संगत में से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में पांच प्यारे बन जायें, जो पेश हुए सज्जन की भूल को विचार कर, गुरु संगत के पास तन्ह (दंड) तजवीज़ करें।

संगत को क्षमा करते समय हठ नहीं करना चाहिए। न ही तन्खाह (दंड) लगवाने वाले को दंड भरने की आनाकानी करनी चाहिए। तनखाह (दंड) किसी किस्म को सेवा, ख़ास करके जो हाथों से की जा सके, लगानी चाहिए। अंत में सोध की अरदास हो।

४. गुरमता करने कि विधि

(क) गुरमता (सिख संकल्प) केवल उन्हीं मुद्दों पर ही हो सकता है, जो सिख धर्म के मौलिक सिद्धांतों की पुष्टि के लिए हों, अर्थात् गुरु साहिबान या गुरु ग्रंथ साहिब की पदवी, बीड़ की निरोलता, अमृत, रहित-बहित, पंथ की बनावट आदि को कायम रखने के बारे में और किसी किस्म के साधारण (धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक) प्रश्न पर केवल मता (प्रस्ताव) हो सकता है।

(ख) यह गुरमता गुरु पंथ का चुना हुआ केवल शिरोमणि जत्था या गुरु पंथ का प्रतिनिधि सम्मेलन ही कर सकता है।

५. स्थानीय फ़ैसलों की अपील

स्थानीय गुर संगत के फ़ैसलों की अपील श्री अकाल तख़्त साहिब के पास हो सकती है।